अधिगम के लिए सहायक वातावरण बनाना

अरुणा ज्योति

'हर बच्चा सीख सकता है', यह कथन मुझे यह सोचने पर मजबूर करता है कि वह 'क्या सीखता है'? क्योंकि मेरे लिए, एक स्तर पर, यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि हर बच्चा सीख सकता है।

जब हम यह मानकर चलते हैं कि सीखना केवल स्कूलों में ही सम्भव है तब यह एक विवादास्पद प्रश्न बन जाता है। स्कूल का अर्थ है 'उपलब्धि' के लिए, 'प्रतियोगिता' करने के लिए, 'प्रदर्शन' करने के लिए और 'सफल' होने के लिए सीखना... अभिभावक या शिक्षक के रूप में हमारी यह आकांक्षा होती है कि हमारे बच्चे अपने जीवन में सफल हों। बच्चे की 'क्षमता', 'रुचियाँ', 'चुनौतियाँ', 'योग्यताएँ' आदि यहाँ पर मायने नहीं रखतीं। इसलिए बच्चों को स्कूल भेजना और वह भी एक 'अच्छे स्कूल' (जिसकी परिभाषा हममें से हर एक के लिए अलग-अलग होती है) में भेजना पालन-पोषण का एक बेहद महत्त्वपूर्ण हिस्सा बन जाता है।

> "वैसे तो शिक्षा का मूल उद्देश्य बच्चों को उनकी क्षमता विकसित करने, जीवन में एक सार्थक मार्ग को परिभाषित करने और उसका अनुकरण करने में सक्षम बनाना है; लेकिन वैश्वीकरण ने शिक्षा प्रणाली पर एक अतिरिक्त दबाव डाला है कि वह ऐसे 'विजेता' तैयार करे जो योग्यतम की उत्तरजीविता की दौड़ में लड़ने के लिए तैयार हों।" — मीनू आनन्द

मीनू आनन्द का यह कथन फ़िल्म तारे ज़मीन पर की याद दिलाता है। यह फ़िल्म मुझे वहाँ तक तो अच्छी लगी जब एक संवेदनशील शिक्षक बच्चे की समस्या को पहचान लेता है और उसे प्रेरित करने के तरीक़े खोजता है। बच्चों की प्रतिभा को पहचानना महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह उनके आत्मविश्वास को बढ़ाता है और उन्हें आशा देता है। वे ख़ुशी-ख़ुशी स्कूल आने के लिए तत्पर रहते हैं और लगातार आते रहते हैं। यह बच्चों को अपने हिसाब से रहने देने का एक सुन्दर तरीक़ा भी है। साथ ही हम ख़ुद को भी यह याद दिला पाते हैं कि लोग विभिन्न क्षेत्रों में प्रतिभाशाली हो सकते हैं। लेकिन फ़िल्म को लेकर मुझे समस्या (व्यक्तिगत रूप से) तब हुई जब बच्चे को 'विजेता' होना ही था!

सीखने में बच्चों की मदद करने के लिए शिक्षकों को निस्सन्देह रूप से विभिन्न रणनीतियों का उपयोग करना चाहिए, जैसे— बच्चों को पढ़ाई में शामिल करने के लिए गतिविधि आधारित अधिगम का उपयोग करना, प्रश्न पूछने को प्रोत्साहित करने के लिए चर्चा करना, अधिगम को दिलचस्प बनाने के लिए टीएलएम और वर्कशीट्स आदि का उपयोग करना। मैं ऐसी अनेक चीज़ों की सूची बना सकती हूँ जिनका उपयोग शिक्षक करते हैं और कड़ी मेहनत भी करते हैं ताकि बच्चों को सीखने में मदद मिल सके।

तो भी हम इस सच्चाई से इन्कार नहीं कर सकते कि हर कक्षा में ऐसे बच्चे होते हैं जिन्हें सीखने में कठिनाई होती है। वे कक्षा में ध्यान केन्द्रित नहीं कर पाते, अधीर होते हैं, उनके व्यवहार को लेकर समस्याएँ होती हैं, वे गृहकार्य नहीं करते या दिया गया कार्य पूरा नहीं करते आदि। कक्षा में इस प्रकार के मुद्दों के कई कारण हो सकते हैं, मसलन अधिगम सम्बन्धी समस्याएँ (जैसे डिस्लेक्सिया आदि), विशेष आवश्यकताएँ, पहली पीढ़ी के शिक्षार्थी या भावनात्मक समस्याएँ। मैं यहाँ पर विशेष आवश्यकताओं वाले मुद्दे को छोड़ रही हूँ और व्यवहार सम्बन्धी समस्याओं और पहली पीढ़ी के सीखने वाले बच्चों से सम्बन्धित मुद्दों की बात करूँगी।

मुद्दे कई हो सकते हैं : आक्रामकता, हिंसा, चिड़चिड़ापन, अवज्ञा, टालना या थकावट, नींद, सुस्ती की शिकायतें आदि। कई बार इस तरह के व्यवहार बच्चे की किसी आन्तरिक गड़बड़ी की अभिव्यक्ति हो सकते हैं। जो बच्चे भावनात्मक रूप से परेशान होते हैं, वे स्कूल के माहौल के एक या अधिक महत्त्वपूर्ण पहलुओं के साथ समायोजन करने में कठिनाई का अनुभव करते हैं। उन्हें सीखने में समस्या होती है क्योंकि वे ध्यान देने में सक्षम नहीं होते हैं। उन्हें दोस्ती करने में कठिनाई होती है, हो सकता है कि वे अपने आप को अलग कर लें और कक्षा की गतिविधियों में भाग लेना बन्द कर दें। सभी बच्चों में अन्तर्निहित ताक़त होती है और वे सीखने में सक्षम होते हैं, बशर्ते कि कक्षा या स्कूल के कार्यक्रम उन्हें एक सकारात्मक वातावरण प्रदान करें। उनके सीखने की जगह सहायक, उत्साहजनक, सुरक्षित और हितकारी होनी चाहिए।

ऐसा वातावरण बनाने के लिए शिक्षकों को अच्छी तरह से तैयार होना पड़ेगा। बच्चे के व्यवहार के पीछे का कारण जानने के लिए बच्चों की थोड़ी बहुत देखभाल करने और व्यक्तिगत रूप से उनका ध्यान रखने से वास्तव में उनकी बहुत

मदद हो सकती है। बच्चों से उनकी भावनाएँ व्यक्त करवाना आसान काम नहीं है क्योंकि हो सकता है कि उन्हें अपनी भावनाओं को प्रभावी ढंग से व्यक्त करना नहीं सिखाया गया हो। ऐसे समय में शिक्षक बच्चे के सीखने के लिए उचित या वांछनीय व्यवहार के नमूने पेश कर सकते हैं। चूँकि भावनाओं को व्यक्त करने में समय लगता है और इसके लिए अभ्यास की आवश्यकता होती है, इसलिए बहुत कुछ इस बात पर भी निर्भर करता है कि शिक्षक बच्चों को सँभालते समय अपनी भावनाओं को कैसे नियंत्रित करते हैं। बच्चों के साथ नियमित रूप से अनौपचारिक बातचीत करने से इस सम्बन्ध में मदद मिल सकती है। जब बच्चे काम कर रहे होते हैं, उस समय कुछ शिक्षक हल्का-हल्का और मधुर संगीत भी बजाते हैं ताकि उन्हें शान्त और तनावमुक्त वातावरण मिले। कुछ शिक्षक बच्चों को अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए चित्र बनाने या रंग भरने को कहते हैं, तो कुछ अन्य बच्चों को अपने व्यवहार पर चिन्तन करने के लिए समय देते हैं। मुझे लगता है कि शिक्षकों को इस तरह की रणनीतियों का सहारा लेने से पहले बच्चों की शैली और सुविधा के आधार पर इनका चयन करना चाहिए और यह सोचना चाहिए कि कौन-सी रणनीति उनके लिए सबसे सही रहेगी।

किन्तु किसी बच्चे के मुद्दों के बारे में कोई निष्कर्ष निकालने से पहले विशेष चिकित्सकों, अभिभावकों और विशेषज्ञों के साथ इस मामले पर चर्चा करना बेहतर होगा।

मेरी जानकारी के अनुसार बच्चे कभी-कभी केवल इसलिए अधीर हो जाते हैं क्योंकि वे कक्षा में ऊब जाते हैं। इसका कारण यह है कि जो कुछ पढ़ाया जा रहा है या तो वे उसके बारे में ज़्यादा जानते होते हैं (उससे परिचित होते हैं) या फिर शिक्षक जो पढ़ा रहे हैं वे उससे जुड़ नहीं पाते। यह भी हो सकता है कि वे रोज़मर्रा के किसी काम के चलते कक्षा में ध्यान न दे पा रहे हों, जैसे कि शाम को जन्मदिन की पार्टी, माँ का अस्वस्थ होना या घर में किसी गड़बड़ी का होना, दिन की शुरुआत ही ग़लत होना, गृहकार्य न करना इत्यादि। इसलिए वे मानसिक रूप से कक्षा में उपस्थित नहीं होते हैं। वे पहली पीढ़ी के शिक्षार्थी भी हो सकते हैं जो स्कूली शिक्षा और सीखने के तरीक़ों के साथ तालमेल बैठाने में समय ले रहे हैं।

कुछ ऐसी रणनीतियाँ जो शायद कारगर हो सकती हैं

जो बच्चे दूसरों की तुलना में होशियार होते हैं

हम किस आधार पर किसी को होशियार मानते हैं? शिक्षक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि जब बच्चा कक्षा के स्तर के वे

4

Chapter 4

Reproduction in Animals

Synopsis

1. The process of giving birth to their own kind of animals is called reproduction.
2. Animals reproduce mainly in two ways : giving birth to young ones like themselves and laying eggs.
3. The animals which reproduce by giving birth to young ones of their own kind are called mammals. Human beings, cows, lions, etc., are some examples of mammals.
4. Mammals have hair which keep them warm.
5. Mammals take care of their young ones by giving milk, cleaning them and protecting them from enemies.
6. Mammals are warm blooded. They have a constant body temperature.
7. Most mammals live on land. Monkeys and squirrels which live on trees, whales and dolphins which live in water are also mammals.
8. Birds lay eggs and keep them warm under their feathers. After some days, eggs hatch and young ones come out.
9. Eggs are either oval shaped or round shaped with a thick outer protective shell which protects the growing parts inside. Inside the egg, there is a white thick liquid called egg white and a yellow liquid at the centre called egg yolk. Egg white is also called albumen.
10. Fishes lay eggs in water and reptiles like crocodiles, snakes and turtles lays on land.
11. Frogs lay eggs in water which hatch into tadpoles. Tadpoles grow into frogs. They look like fishes.
12. Some insects like grasshopper and cockroach pass through three stages in their life cycle. Eggs laid by cockroach develop into small baby insects called nymphs. These do not exactly like cockroaches. They shed their skin several times to become cockroach. This process is called moulting.
13. Other insects like housefly and butterfly pass through four stages. The young ones hatched from the eggs are called larvae and look like worms.
14. After growing for sometime larva covers itself in a cocoon. This stage is called pupa. Finally pupa bursts and the fully grown insect comes out. Unlike mammals, the babies of the insects are not looked after by their parents.

4. Reproduction in Animals 129 Class IV-Science

सभी काम कर ले जो सभी से अपेक्षित हैं, तो उसके बाद ही उसे कोई अतिरिक्त काम दिया जा सकता है। बच्चे को विभिन्न दृष्टिकोणों से एक ही समस्या (अवधारणा) का हल करने के विस्तृत करने का अवसर प्रदान करते हैं। साथ ही अभ्यास के नाम पर बार-बार एक ही तरह का काम करके यंत्रवत रूप से उसे करने के बोझ को महसूस किए बिना उसी अवधारणा

9. In the egg stage, energy is obtained from
(A) the leaves of the plants
(B) egg yolk present in the egg
(C) killing other insects
(D) photosynthesis

10. In the larva stage, energy is obtained from
(A) egg yolk (B) leaves
(C) photosynthesis
(D) soil

11. Which of the following reproduce by laying eggs?
(A) Tiger (B) Cat
(C) Rat (D) Frog

12. Harika checked the temperature of her sister and made the following observation table

[illegible]	Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

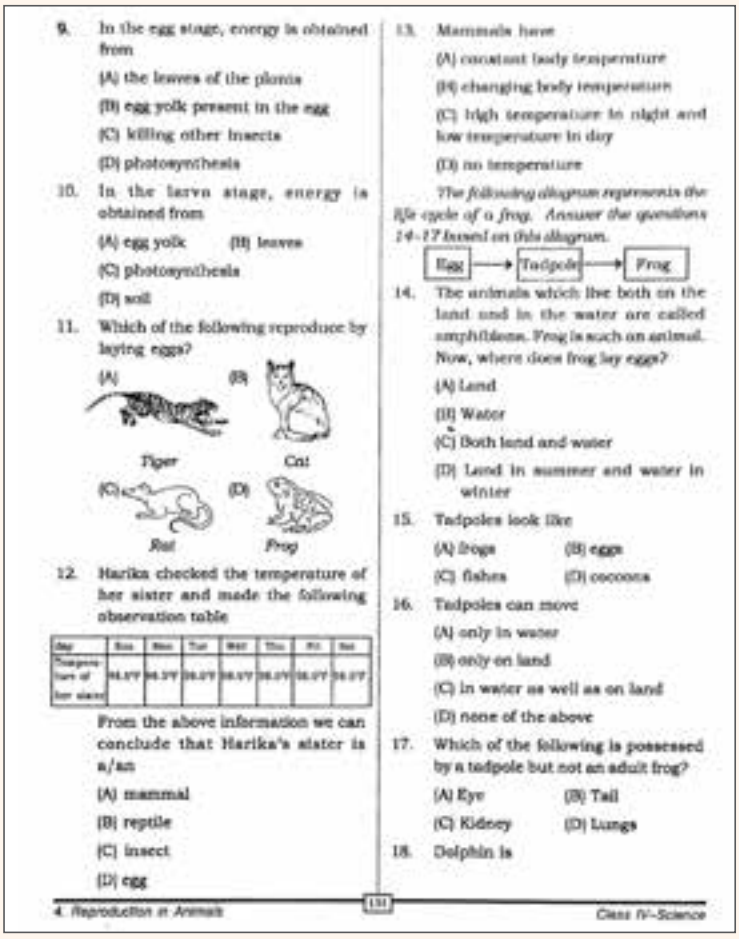

From the above information we can conclude that Harika's sister is a/an
(A) mammal
(B) reptile
(C) insect
(D) egg

13. Mammals have
(A) constant body temperature
(B) changing body temperature
(C) high temperature in night and low temperature in day
(D) no temperature

The following diagram represents the life cycle of a frog. Answer the questions 14-17 based on this diagram.

Egg → Tadpole → Frog

14. The animals which live both on the land and in the water are called amphibians. Frog is such an animal. Now, where does frog lay eggs?
(A) Land
(B) Water
(C) Both land and water
(D) Land in summer and water in winter

15. Tadpoles look like
(A) frogs (B) eggs
(C) fishes (D) cocoons

16. Tadpoles can move
(A) only in water
(B) only on land
(C) in water as well as on land
(D) none of the above

17. Which of the following is possessed by a tadpole but not an adult frog?
(A) Eye (B) Tail
(C) Kidney (D) Lungs

18. Dolphin is

4. Reproduction in Animals — Class IV–Science

अवसर देकर उसे चुनौतीपूर्ण बनाएँ। उदाहरण के लिए, गणित में यदि गुणन संक्रिया की बात चल रही है तो शिक्षक आमतौर पर एक अंकीय से दो अंकीय, दो से तीन अंकीय, तीन से चार अंकीय— इस तरह से आगे बढ़ते हैं। बच्चे 4×25 को केवल पहाड़े के ज्ञान का उपयोग करके हल करने की बजाय अपने सवाल ख़ुद बना सकते हैं, वे पहाड़े में मिलने वाले पैटर्न खोज सकते हैं, कहानी-प्रश्न या इबारती प्रश्न के माध्यम से इसे हल कर सकते हैं, अपने ख़ुद के कहानी-प्रश्न बना सकते हैं और इस तरह के सवालों के जवाब खोज सकते हैं, कि हालाँकि 25×4 और 4×25 का उत्तर समान है, फिर उन्हें इस तरह लिखने में क्या अन्तर है। शिक्षक बच्चों को सवाल हल करने के विभिन्न तरीक़ों से भी अवगत करा सकते हैं। उदाहरण के लिए मुझे याद है कि एक बच्चा 40 + 42 को हल करने के लिए पहले 40 + 40, जोड़ रहा था और फिर 2 जोड़ रहा था। घटाव के सवालों में बच्चों को आगे की गिनती करना सिखाया जाता है, लेकिन कुछ बच्चों के लिए उलटी गिनती करना सुविधाजनक हो सकता है —ऐसे विभिन्न तरीक़ों से सवाल हल करने की अनुमति दें। यह अभ्यास, बच्चे को अपनी सोच के दायरे को पर काम करने का अवसर भी प्रदान करते हैं। इससे बच्चे का जुड़ाव भी बना रहेगा। बेशक, इस सबके लिए शिक्षक को योजना बनानी पड़ेगी।

जो बच्चे आसानी से ऊब जाते हैं

उस बच्चे का क्या जो कक्षा में इसलिए ऊब जाता है क्योंकि जो कुछ सिखाया जा रहा है उससे वह जुड़ नहीं पाता? शिक्षकों को चाहिए कि वे ऐसे तरीक़े खोजें जिससे बच्चे अवधारणाओं को वास्तविक जीवन के साथ जोड़ सकें या ऐसे उदाहरणों का उपयोग करें जिससे बच्चे को अपना नया अधिगम आस-पास की चीज़ों से जोड़ने में मदद मिले —वैसे भी यह एक सामान्य रणनीति के रूप में आवश्यक है। कुछ बच्चों को लम्बे समय तक इसकी आवश्यकता हो सकती है और शिक्षकों को इसके बारे में जानकारी होनी चाहिए।

इसके अलावा अगर अवधारणाओं या विषय सामग्री को छोटे और प्रबन्धनीय अंशों में विभाजित कर दिया जाए तो उससे भी बहुत मदद मिल सकती है। उदाहरण के लिए यदि ‘जानवरों में प्रजनन’ विषय पढ़ाना है तो विषय सामग्री को बच्चे के लिए

चित्रानुसार फिर से तैयार किया जा सकता है अन्त में दिए गए जवाब की चिन्ता नहीं करनी चाहिए। इसका उद्देश्य यह है कि बच्चा सीख जाए, इसलिए समय के साथ-साथ (बशर्ते कक्षा में सही उत्तर देने की चिन्ता दूर हो जाए) बच्चे यह सीख जाएँगे कि पहले से उत्तरों को न देखें।

पहली पीढ़ी के शिक्षार्थियों के सामने आने वाले मुद्दे

उपरोक्त रणनीति को कुछ हद तक पहली पीढ़ी के शिक्षार्थियों की भी मदद करनी चाहिए, हालाँकि उनके मुद्दे कुछ अलग होते हैं। वे कई अन्य कारणों से चिन्ता का अनुभव कर सकते हैं, जैसे— नई जगह, नई परिस्थिति, नए लोग, लम्बे समय तक घर से दूर रहना, भाषा की बाधा आदि। इस बात की सम्भावना बहुत अधिक है कि यह बच्चे या कुछ अन्य बच्चे (जो ज़रूरी नहीं कि पहली पीढ़ी के शिक्षार्थी हों) असामान्य व्यवहार का प्रदर्शन करें। शायद कुछ बच्चे कक्षा में रहते हुए भी कक्षा से अलग हो जाएँ, शिक्षकों को जवाब न दें या प्रतिक्रिया न दिखाएँ (तीसरी कक्षा में मेरे पास एक ऐसा बच्चा था जिसे कक्षा में बोलने के लिए लगभग एक साल लग गया था), कुछ आक्रामक हो सकते हैं, कुछ धौंस जमाने वाले बन सकते हैं, कुछ बिना किसी स्पष्ट कारण के रोने लग सकते हैं (कुछ भी नया होने पर चिन्ता करने लगना)। जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया, किसी प्रकार की चिन्ता का होना और विभिन्न प्रकार की अनसुलझी भावनात्मक समस्याओं का सामना करना इस तरह के व्यवहार का कारण हो सकता है। इसलिए शिक्षकों के लिए यह महत्त्वपूर्ण है कि वे बच्चे के साथ घनिष्ठता स्थापित करें (उम्र या कक्षा का स्तर कोई बाधा नहीं है— भावनात्मक मुद्दे किसी भी आयु वर्ग के लिए एक समस्या हो सकते हैं —क्या हम सभी व्यक्तिगत तनाव की स्थितियों के कारण बुरे दिनों से नहीं गुज़रते?)

पहली पीढ़ी के शिक्षार्थियों को लेकर शिक्षकों को ज़्यादातर इस समस्या का सामना करना पड़ता है कि बच्चों को घर में अकादमिक सहायता प्रदान करने वाला या उनसे अपना गृहकार्य करवाने वाला कोई नहीं होता है। पहली पीढ़ी के शिक्षार्थियों की परिभाषा ही यह है कि जो पहली बार स्कूल जा रहे हैं। अतः बतौर शिक्षक यह सोचना महत्त्वपूर्ण हो जाता है कि ऐसी स्थितियों में गृहकार्य की प्रकृति कैसी हो या गृहकार्य देने के क्या कारण हैं। जब यह स्पष्ट है कि बच्चे गृहकार्य नहीं कर सकते तो फिर उसे देते रहने का क्या अर्थ है? थोड़ा रचनात्मक होने और बच्चों की पारिवारिक स्थितियों पर विचार करने से बहुत कुछ हासिल किया जा सकता है। शिक्षक आसानी से बच्चों में अन्य ऐसी आदतें डाल सकते हैं जो अकादमिक अधिगम का मार्ग प्रशस्त करती हों, जैसे— वे बच्चों के लिए स्कूल के बाद के समय के लिए कार्यकलाप निर्धारित कर सकते हैं (वस्तुतः यह एक प्रकार की समय सारणी ही होगी क्योंकि हो सकता है कि माता-पिता के पास अपने बच्चों के साथ बिताने का समय न हो), दिनचर्या निर्धारित करके उनमें काम करने की आदतें विकसित कर सकते हैं, उन्हें पढ़ने के लिए प्रेरित कर सकते हैं (जैसे कि लेबल, साइन बोर्ड, टीवी आदि), समय प्रबन्धन के कौशल सिखा सकते हैं (स्कूल के लिए तैयार होने के लिए सुबह ठीक समय पर जागने जैसी सरल आदतें)।

एक बार फिर मैं इस तथ्य पर ज़ोर देना चाहूँगी कि यह रणनीतियाँ केवल छोटी कक्षाओं के लिए नहीं हैं। बड़ी कक्षाओं में भी कई ऐसे बच्चे होते हैं जिनमें ऐसे अनुशासन और स्व-नियमन की आदतें कम ही होती हैं। शिक्षक जो कार्य बच्चों को देते हैं उसके बारे में समझाने के लिए उन्हें अतिरिक्त प्रयास करना चाहिए। अभिभावकों से अनुरोध किया जा सकता है कि गृहकार्य करते समय वे अपने बच्चे के पास रहें या बच्चों से सिर्फ़ इतना पता करें कि क्या उन्हें कोई काम पूरा करना है। भले ही वे कोई अकादमिक सहायता प्रदान न कर पाएँ लेकिन अगर वे अपने बच्चे की स्कूलिंग और सीखने की प्रक्रिया में शामिल भर हो जाएँ तो बच्चा पढ़ाई करने के लिए प्रेरित हो सकता है। अभिभावक के साथ इस तरह की भागीदारी और जुड़ाव से निश्चित रूप से मदद मिलेगी और वे अपने बच्चों का समर्थन करना शुरू कर देंगे। इस तरह के जुड़ाव के लिए अभिभावक-शिक्षक सम्बन्ध महत्त्वपूर्ण होते हैं। जब अभिभावक सम्मानित और जुड़ाव महसूस करेंगे तो वे यह भी सुनिश्चित करेंगे कि उनका बच्चा नियमित रूप से स्कूल जा रहा है क्योंकि कई मामलों में स्कूल न जाना भी अपने आप में एक चिन्ता का विषय हो सकता है।

माना कि अंक बच्चों के अधिगम का एक संकेतक हैं और अभिभावक भी उन्हें महत्त्वपूर्ण मानते हैं। लेकिन स्कूल, अभिभावक-शिक्षक बैठकों के दौरान अभिभावकों के साथ विचारपूर्ण बातचीत करके, अधिगम को प्रमाण आधारित बनाने की पहल कर सकते हैं। शिक्षकगण अभिभावकों के साथ बच्चों के काम की वर्कशीट, उत्तर पुस्तिकाएँ और नोटबुक साझा कर सकते हैं और अभिभावक को उनके बच्चे के काम और क्षमता के बारे में समझा सकते हैं। अकसर इस पर विचार नहीं किया जाता है क्योंकि अभिभावक शिक्षित नहीं होते और यह महसूस किया जाता है कि शायद वे यह सब समझ न पाएँ। मुझे लगता है कि बतौर शिक्षक यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि बच्चों के काम को अभिभावकों के साथ साझा करें और अभिभावकों का यह अधिकार है कि वे अपने बच्चे के कार्य-प्रदर्शन के बारे में जानें। अभिभावक-शिक्षक की बैठकों को शिकायतों की बैठकें नहीं बनना चाहिए क्योंकि इसी कारण से माता-पिता इन बैठकों से बचने की कोशिश

करते हैं। यदि हम वास्तव में मानते हैं कि 'हर बच्चा सीख सकता है' तो हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हम बच्चे के गुणों को उजागर करने के साथ-साथ यह भी बताएँ कि उन्हें किन क्षेत्रों में सुधार करना है। कुछ स्कूल अभिभावक-शिक्षक की बैठकों में शैक्षिक फ़िल्में दिखाते हैं। यह सभी अभिभावकों को अपने बच्चे की शिक्षा में शामिल करने के तरीक़े हैं, न कि सिर्फ़ उनके अकादमिक क्षेत्रों में शामिल करने के।

सभी विद्यार्थी विविध आवश्यकताओं और क्षमताओं के साथ स्कूल आते हैं, इस लिहाज से कोई भी विद्यार्थी मौलिक रूप से भिन्न नहीं है। स्कूल ऐसे बच्चों की सहायता करने के लिए उपचारात्मक कक्षाएँ, अतिरिक्त कक्षाएँ भी चलाते हैं। उपचारात्मक कक्षाएँ तभी सफल होंगी जब शिक्षक बच्चों के सीखने के अन्तराल को पाटने के लिए विभिन्न रणनीतियों का उपयोग करेंगे और कक्षा में की गई चीज़ों को दोहराएँगे नहीं। अन्यथा बच्चे इन कक्षाओं में शामिल न होने के बहाने ढूँढ़ेंगे। यहाँ सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू समुदाय का जुड़ाव है : हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि अभिभावक, शिक्षक और स्कूल एक ही दिशा में सोचते हों, एक ही उद्देश्य के लिए काम कर रहे हों और बच्चों की भलाई के लिए एक-दूसरे का समर्थन करते हों।

बतौर शिक्षक यह हम सब पर निर्भर है कि हम बच्चों की ज़रूरतों को पहचानें और उन्हें अधिगम के लिए एक सुरक्षित और अनुकूल वातावरण प्रदान करें। अधिगम या सीखने के बारे में अपनी यादों को ताज़ा करने के लिए एनसीएफ 2005 दस्तावेज़ के अध्याय 2 (सीखना और ज्ञान) पर फिर से एक बार नज़र डालना लाभदायक हो सकता है।

References

Tom. E.C. Smith, Polloway, et al. (2015) Teaching Students with Special Needs in Inclusive Settings. Toronto; Pearson Canada Inc

National Curriculum Framework 2005

Anand, M. (2015) Globalisation and Indian School Education: Impact and Challenges. European Scientific Journal, 1: 235–49.

अरुणा ज्योति अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलूरु में प्राध्यापक हैं। उन्हें स्कूल अध्यापिका के रूप में कई वर्षों का अनुभव है। परामर्श और विशेष आवश्यकताओं के विभाग के प्रमुख के रूप में उन्होंने धीमी गति से सीखने वाले शिक्षार्थियों के लिए एक गतिविधि केन्द्र स्थापित किया है। अरुणा वीएचएस अस्पताल, चेन्नई और एसएनईएचए (धीमी गति से सीखने वाले शिक्षार्थियों के लिए एक केन्द्र) में स्वयंसेवक रही हैं। अरुणा अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन स्कूलों की उस टीम में भी रही हैं, जिसने आरम्भ के छह अज़ीम प्रेमजी स्कूल स्थापित किए थे। उन्होंने इन स्कूलों में शिक्षक व्यावसायिक विकास, पाठ्यक्रम विकास, सीसीई, ईसीई, विशेष शिक्षा और किशोरावस्था से सम्बन्धित क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर काम किया है। उनसे aruna.v@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।
अनुवाद : नलिनी रावल